Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept of Commerce
Sub:- Business Organisation (Subsidiary)
B.Com Part-1st, Paper:- 1st
SNSRKS College SHARSA

Lecture : 37

B.Com Part-1st Sub:- Business Organisation (Subsidiary)

Introduction

* Need And Importance of Management in India
(भारत में प्रबन्ध की आवश्यकता एवं महत्व)

भारत एक विकासशील देश है। प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों की दृष्टि से यह एक धनी राष्ट्र है। यदि देश के हित में विवेकपूर्ण इन साधनों का उपयोग किया जाए तो देश को शीघ्र ही विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाकर खड़ा किया जा सकता है। देश में पंच-वर्षीय योजनाओं के माध्यम से एक समाजवादी समाज की रचना करने का बीड़ा हमारी सरकार ने उठाया है। देश का द्रुतगति से आर्थिक विकास करने के लिये आधारभूत एवं भारी उद्योगों की स्थापना की गई है। देश में हरित-क्रान्ति के क्षेत्र में विस्तार करने हेतु कई संघनन कृषि कार्यक्रम प्रारंभ किये गए है।

हमारा देश ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी दिन-दूनी, रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। इतना होते हुए भी हम अपना वांछित स्तरों पर आर्थिक विकास नहीं कर पाये है। इनके कई कारण है। हमारी जनसंख्या में तेजी निरंतर वृद्धि हो रही है। श्रम-पूंजी के विवाद आये दिन होते रहते है। कारखानों में हड़तालें एवं तालाबन्दी तो एक आम बात हो गई है। हमारे यहाँ उत्पादन की लागत में बड़ा ही अपव्यय होता है। विभिन्न उत्पादकों एवं निर्माताओं में असहयोग है तथा व्यवसाय का संगठन बड़ा ही दूषित, अपर्याप्त एवं असन्तोषजनक है। हमारी उत्पादन सामग्री निम्न स्तर की है। औद्योगिक अनुसंधान का अभाव है तथा देश में अप्रचलित विपणन विधियों का बोलबाला है। हमारा

कारी अपने दायित्व को भली प्रकार निभा सके, इसलिये उसे अधिकार प्रदान किये जाते हैं।

(10) व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामान्य हित की अधीनता (Subordination of Individual Interest to General Interest) :- इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामान्य हितों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

(11) केन्द्रीकरण (Centralisation) :- इसके अन्तर्गत यह व्यवस्था रहती है कि श्रमिकों की योग्यताओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिये केन्द्रीकरण किस अनुकूलतम स्तर तक रखा जाय।

(12) निर्देश की समानता (Unity of Direction) :- कार्य को सुचारू रूप में चलाने के लिये यह आवश्यक है कि निर्देशन की समानता हो।

(13) न्याय (Equity) :- कर्मचारियों में भेदभाव करने के स्थान पर न्याय के प्राथमिक सिद्धान्तों का पालन किया जाना चाहिए।

(14) सहयोग (Espirit Decorps) :- सफलता प्राप्त करने हेतु सहयोग की भावना से काम किया जाना चाहिए। 'फूट डालो और राज करो' के स्थान पर एकता की भावना पर बल दिया जाना चाहिए। "फेयोल के प्रबन्धनों के सिद्धान्त की उपरोक्त सूची बिल्कुल पूर्ण तथा व्यापक है।

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College,
SAHARSA

(5) कर्मचारियों में स्थायित्व का होना (Stability of Tenure Personnel) :- प्रशासन की दृष्टि से कर्मचारियों को नित्य-प्रति बदला जाना सर्वथा अहितकर रहता है। ऐसा करने से असफलता का सामना करना पड़ता है, अतः कर्मचारियों में स्थायित्व का होना नितान्त आवश्यक है।

(6) कर्मचारियों को प्रेरणा (Initiative) :- कर्मचारियों को उचित प्रेरणा देने की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वे नयी-नयी योजनाएँ प्रस्तुत कर सकें तथा उन्हें सफल बनाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकें।

(7) कर्मचारियों को पारिश्रमिक (Remuneration of Personnel) :- किये गये कार्यों के लिये कर्मचारियों को पारिश्रमिक इस प्रकार दिया जाना चाहिए जिससे कि नियोक्ता तथा कर्मचारी दोनों को ही सन्तोष का अनुभव हो। आधुनिक व्यावसायिक जगत में कर्मचारियों को पारिश्रमिक देने की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। व्यवसाय की प्रकृति, कर्मचारियों के गुण तथा विद्यमान परिस्थितियों के अनुसार कर्मचारियों को पारिश्रमिक देने की किसी भी ऐसी विधि को अपनाना चाहिए, जिससे दोनों को लाभ हो।

(8) प्रबन्ध की एकता (Unity of Management) :- प्रबन्ध में एकता होनी चाहिए इसके लिये यह आवश्यक है कि एक ही उद्योग की समान लक्ष्य वाली विभिन्न क्रियाओं को जहाँ तक सम्भव हो, एक ही प्रबन्ध के अन्तर्गत रखा जाना जाना चाहिए, ताकि उनके कार्यों का समन्वय किया जा सके।

(9) अधिकार तथा दायित्व (Authority and Responsibility) :- [illegible]

(10) न्यूनतम साधनों से अधिकतम परिणामों की प्राप्ति के लिये।
(11) श्रम-समस्याओं का संतोषजनक ढंग से समाधान करने के लिये।
(12) निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये — निर्गत करो या समाप्त हो जाओ के नारे को क्रियान्वित करने के लिये।
(13) वैज्ञानिक एवं तकनीकि परिवर्तनों को शीघ्रता एवं प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये।
(14) व्यक्तियों के विकास के लिये।
(15) आधारभूत औद्योगिक सुविधाओं (शक्ति, संचार साधन, परिवहन, औद्योगिकी, जल आदि) की व्यवस्था करने के लिये।
(16) रोजगार के साधनों में वृद्धि करने के लिये तथा
(17) 21वीं शताब्दी में प्रवेश करने हेतु तैयार करने के लिये।
(18) अधिकारी तथा अधीनस्थों में मधुर सम्बन्धों की स्थापना के लिये।
(19) देश में सन्तुलित एवं चहुँमुखी प्रगति करने के लिये तथा
(20) औद्योगिक प्रजातन्त्र की स्थापना करने के लिये।

The end

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept of Commerces
Sub:- Business Organisation
(Subsidiary)
B.Com Part 1st
Paper:-
S.N.S.R.K.S College, SAHARSA